ॐ स्वस्थ समाज संरचना का संकल्प – जीवन विज्ञान : आचार्य महाप्रज्ञ, जीवन विज्ञान प्रणेता ॐ

Jeevan Vigyan (Science of Living)
e-Newsletter

Volume : 4; Number :4
Editor
Hanuman Mal Sharma

जीवन विज्ञान : स्वस्थ समाज संरचना का संकल्प

संवेदनाओं पर नियंत्रण कैसे करें? आदमी संवेदनाओं के साथ चलता है, जीता है। ऐसी स्थिति में संवेदनाओं पर नियंत्रण करना सरल बात नहीं है। इन्द्रिय संवेदनाओं से परे होकर जीना साधु–संन्यासियों के लिये तो साध्य हो जाता है, पर विद्यार्थी ऐसा कर सके, बहुत कठिन बात है। आज का बच्चा प्रारम्भ से ही इन्द्रिय संवेदनाओं के साथ जीता है। सिनेमा, टी.वी., क्रिकेट, फिल्मी गानें। उसका पूरा दिन इन्द्रिय संवेदनाओं के सहारे बीतता है। धीरे–धीरे वह उसकी प्रकृति बन जाती है। वह परिणाम को नहीं जानता, विपाक को नहीं जानता। किंपाक का फल दिखने में सुन्दर होता है। उसका रंग–रूप मनोहारी होता है पर उसको खाने का परिणाम होता है मृत्यु। इन्द्रिय संवेदनाओं की भी यही स्थिति है। ये संवेदनाएं प्रवृत्तिकाल में सुखद लगती हैं, पर उनका परिणाम कटु होता है। कुछ कार्य ऐसे होते हैं जो प्रवृत्ति–काल में अच्छे लगते हैं, पर उनका परिणाम दुःखद होता है। कुछ कार्य प्रवृत्ति–काल में बुरे होते हैं पर उनका परिणाम सुखद होता है। भारतीय दर्शन में वही प्रवृत्ति अच्छी मानी जाती है जिसका परिणाम कल्याणकारी होता है।

इन्द्रिय संवेदनाओं का परिणाम कभी अच्छा नहीं होता। बच्चा इस तथ्य को नहीं जानता, अतः माता–पिता और शिक्षक को ऐसा प्रयत्न करना चाहिए कि उसे यह भान हो सके कि इन्द्रिय–संयम जीवन विकास के लिये आवश्यक है। बालक की अवस्था परानुशासन की अवस्था है, आत्मानुशासन की अवस्था नहीं है। बालक जब किशोर बन जाए तब उसे परिणाम–बोध देना अत्यन्त जरूरी है। संवेदनाओं पर नियंत्रण पाने का उपाय है परिणाम–बोध। बच्चों को विपाक का बोध कराना, प्रवृत्ति का परिणाम क्या होगा, इसकी अवगति देना बहुत जरूरी है। – **आचार्य महाप्रज्ञ**

महान् क्रान्तिकारी संत थे आचार्य भिक्षु
(भिक्षु अभिनिष्क्रमण दिवस समारोह आयोजित)

लाडनूँ 20 अप्रैल। आचार्यश्री महाश्रमणजी के आज्ञानुवर्ती मुनिश्री सुमेरमलजी 'सुदर्शन' के सान्निध्य में ''आचार्य भिक्षु अभिनिष्क्रमण दिवस समारोह'' का आयोजन किया गया।

जैन विश्व भारती के अहिंसा भवन **क्रमशः पृ.2 पेरा 2...**

आओ हम जीना सीखें : कैसे बोलें?

जीवन के क्रियातंत्र को प्रभावित करने वाले तीन तत्त्व हैं – मन, भाषा और शरीर। भाषा संबंधों को विस्तार देती है। यदि भाषा नहीं होती तो हमारी दुनिया बहुत छोटी हो जाती। समाज का निर्माण भाषा से होता है।

बोलना एक बात है, कलापूर्ण बोलना दूसरी बात है। वाणी का सदुपयोग भी किया जा सकता है, दुरुपयोग भी किया जा सकता है। वाणी के द्वारा मनुष्य समस्या को पैदा भी कर सकता है, समस्या का समाधान भी कर सकता है। वाणी के द्वारा दूसरों को उन्मार्ग पर भी ले जाया जा सकता है और कल्याण का पथ भी दिखलाया जा सकता है। प्रश्न है कि बोलना कैसे चाहिए? इस प्रश्न के उत्तर में चार महत्वपूर्ण सूत्रों को समझना चाहिए। वे चार सूत्र हैं – मितभाषिता, मधुरभाषिता, सत्यभाषिता और समीक्ष्यभाषिता। **आचार्य महाश्रमण।** (क्रमशः आगामी अंक में)

प्रेक्षाध्यान पर विचार गोष्ठी का आयोजन

कोबा 17 अप्रैल। प्रे.वि.भा. कोबा एवं ONGC के इन्फोकोम सर्विस एवं लोगिंग विभाग के संयुक्त तत्वावधान में, ONGC परिसर में, आयोजित विचार गोष्ठी में स्वागत भाषण प्रस्तुत करते हुए प्रेक्षा विश्व भारती के प्रशासनिक अधिकारी अशोक कुमार जैन ने संस्था का परिचय दिया व परिसर में होने वाली विभिन्न सामाजिक, सांस्कृतिक तथा आध्यात्मिक गतिविधियों से अवगत करवाया साथ ही आगामी महीने में होने वाले आवासीय शिविर की जानकारी दी।

वरिष्ठ प्रशिक्षक श्री शंभुदयाल टाक ने दीर्घश्वास प्रेक्षा, अनुप्रेक्षा, लेश्याध्यान, यौगिक क्रियाओं, आसन तथा प्राणायाम की सैद्धान्तिक जानकारी के साथ प्रायोगिक अभ्यास करवाया। इस अवसर पर उपस्थित लगभग 80 अधिकारियों एवं कर्मचारीयों की अध्यात्म, योग एवं प्रेक्षाध्यान संबंधी जिज्ञासाओं का समाधान भी किया गया।

प्रेक्षा विश्व भारती के मानद मंत्री श्री पुखराज जी मदानी ने सूचित किया की इस वर्ष प्रेक्षाध्यान के प्रचार–प्रसार के कार्यक्रम सामाजिक संस्थाओं, सरकारी व गैर सरकारी औद्योगिक संस्थानों के साथ संयुक्त रूप से आयोजित किये जायेंगे। इसी कड़ी में 18 अप्रैल, 2013 को ONGC महेसाणा में दो विचार गोष्ठीयों का आयोजन किया गया है जिसमें ओ.एन.जी.सी. के कार्यकारी निर्देशक श्री एस. के. गुप्ता, महेसाणा मुख्य अथिति होगें। आज के कार्यक्रम को सफल बनाने में प्रदीप कुमार गुप्ता (डी.जी.एम.–इन्फोकोम सर्विसेज) एवं प्रेसीडेन्ट लायन्स क्लब, चांदखेडा, सुबोध जैन (डी.जी.एम–लोगींग) श्रीमती गायत्री एवं लायन्स क्लब चांदखेडा के सदस्यों का विशेष सहयोग रहा।

विचार मंथन : मुनि किशनलाल

विचार शक्तिशाली अस्त्र है। जो विचार दूसरों को प्रभावित कर सके वही शक्तिशाली विचार होता है। विचार को शक्तिशाली बनाने के लिए भावना की ऊर्जा चाहिए। बिना ऊर्जा के विचार गति नहीं पकड़ सकता। ऊर्जा निर्माण भी कर सकती है और ध्वंस भी अतः भावना की पवित्रता आवश्यक है।

भावना की पवित्रता से विचार पवित्र होते हैं और उससे सम्यक् निर्माण होता है। भावना को पवित्र बनाने के लिए ज्ञान को पवित्र चेतना में स्थिर रखना होता है अर्थात् किसी वस्तु को देखकर उस पर सुन्दर–असुन्दर का लेबल नहीं लगाना होता है। हमारे कहने से वस्तु न अच्छी हो सकती है और न ही बुरी, न प्रिय और न अप्रिय। यह मात्र हमारा दृष्टिकोण है। अतः वस्तु को वस्तु रहने दे, घटना को घटना रहने दें। यदि आप उस पर आरोपन करते हैं उससे आपके भावों में जो कुछ रूपान्तरण हुआ वह आपका अपना भाव है। आपके भाव निषेधात्मक हो सकते है और सकारात्मक हो सकते हैं।

निषेधात्मक भाव पतन का द्वार है, सकारात्मक भाव उत्थान की सीढ़ियां है। किसी भी विचार पर बार–बार अनुचिन्तन कर उसके यथार्थ को जानिए। यदि उसमें कुछ दम है तो स्वीकार कीजिए और उसे अपनी लेखनी का हस्ताक्षर बनाकर जीवन में उपयोग कीजीए। अपने भाव, विचार एवं ज्ञान को सम्यक् बना अन्यों को परोसिए तब ही आप विचारक बन सकेंगे।

विचार से शब्द बनते हैं। शब्द भाषा में उतरते हैं। भाषा क्रिया में बदलती है। प्रत्येक क्रिया का परिणाम होता है। क्रिया व्यक्तित्व बनाती है। व्यक्तित्व से व्यक्ति की पहचान होती है। व्यक्तित्व की पहचान शरीर के आकार, वस्त्र, आभूषणों से ही नहीं अपितु उसके विचार एवं भावों के द्वारा भी होती है। अतः हमें अपने विचार तथा भावों को शक्तिशाली, पवित्र एवं सकारात्मक बनाना चाहिए।

मन साधे आत्मा सधे, सध जाए संसार।
समाधान हर बात का, रहे न कोई भार।। **–आचार्य तुलसी**

जीवन विज्ञान पत्राचार प्रमाण–पत्र पाठ्यक्रम की सम्पर्क कक्षाओं का आयोजन

लाडनूँ 27 अप्रैल। (निसं) भारत सरकार के मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा संचालित राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान, नोयडा के छमाही जीवन विज्ञान पत्राचार प्रमाण–पत्र पाठ्यक्रम की सम्पर्क कक्षाओं का शुभारम्भ आचार्यश्री महाश्रमणजी के आज्ञानुवर्ती प्रेक्षा प्राध्यापक मुनि किशनलाल के सान्निध्य में जैन विश्व भारती के अहिंसा सभागार में हुआ। सम्पर्क कक्षा में उपस्थित विद्यार्थियों को सम्बोधित करते हुए मुनिश्री ने कहा कि जीवन विज्ञान जीने का नया दर्शन है। शिक्षा के द्वारा अच्छी पीढ़ी का निर्माण हो, अच्छा समाज व संस्कारी नागरिक बने, इसके लिये शिक्षा में भावात्मक विकास के पक्ष को स्थान देना होगा। सही मुद्रा, सही श्वास, सही नींद, सही सोच आदि से हम विद्यार्थियों के जीवन में सकारात्मक परिवर्तन ला सकते हैं।

इससे पूर्व उपस्थित विद्यार्थियों का स्वागत करते हुए जीवन विज्ञान अकादमी के सहायक निदेशक हनुमान मल शर्मा ने जीवन विज्ञान प्रमाण–पत्र पत्राचार पाठ्यक्रम की संक्षिप्त जानकारी दी। 4 मई तक चलने वाली इन कक्षाओं के पश्चात् प्रायोगिक परीक्षा ली जायेगी तथा 6 मई को नागौर के राजकीय सीनियर सैकेण्डरी विद्यालय में सैद्धान्तिक परीक्षा होगी। प्रशिक्षण कार्य में मुनि किशनलाल, समणी डॉ.मल्लीप्रज्ञा, हनुमान शर्मा, महेन्द्र कुमावत एवं रामेश्वर शर्मा का सहयोग प्राप्त हो रहा है। सैद्धान्तिक एवं प्रायोगिक कक्षाएं तुलसी अध्यात्म नीडम में संचालित होगी।

क्रमशः पृ1 पैरा 1...सभागार में आयोजित समारोह में प्रेक्षा प्राध्यापक मुनिश्री किशनलालजी ने कहा कि आचार्य भिक्षु का लक्ष्य पंथ या सम्प्रदाय बनाना नहीं था। उनका लक्ष्य था सत्य के पथ पर चलते हुए संयम की साधना करना, त्याग के साथ आत्मकल्याण का लक्ष्य अर्जित करना। भिक्षु ने सम्प्रदाय का व्यामोह छोड़कर आचार व चरित्र की शुद्धि पर बल दिया। उन्होंने आगमों का पारायण कर आचार व विचार की सम्यकता का निर्धारण किया तथा शुद्ध आचार पूर्ण, संयममय जीवन का उदाहरण प्रस्तुत किया। उनके आदर्श जीवन के आधार पर तेरापंथ का उद्भव हुआ।

तेरापंथ शासन के 'शासन गौरव' मुनिश्री धनंजय कुमार जी ने कहा कि तेरापंथ का इतिहार धर्मक्रान्ति का इतिहास है। एक युग ऐसा आया जब चारित्रिक शुद्धि पर अनास्था के बादल मंडराने, धर्म के नाम पर पाखण्ड पनपने लगा, आत्मिक पवित्रता गौण हो गई। ऐसे विकट समय में आचार्य भिक्षु ने सत्य, अहिंसा, अभय और वीतरागता की सार्थक व्याख्या दी। चारित्रिक शुद्धि के धरातल पर आचार्य भिक्षु ने तेरापंथ का प्रादुर्भाव किया।

मुनिश्री सुमेरमल जी 'सुदर्शन' ने कहा कि भिक्षु महान क्रान्तिकारी संत थे। वे मानते थे कि सत्य के लिये किसी भी वस्तु को छोड़ा जा सकता है, लेकिन किसी भी वस्तु के लिये सत्य को नहीं छोड़ा जा सकता।

समारोह में नगरपालिका अध्यक्ष बच्छराज नाहटा, जैन विश्व भारती के उपमंत्री जीवनमल मालू, डॉ. आनन्दप्रकाश त्रिपाठी, जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा के सहमंत्री शान्तिलाल बैद, सुनिता बैद आदि ने विचार व्यक्त किये। मुनिश्री नीरजकुमार व मुमुक्षु बहनों ने गीतिकाएं प्रस्तुत की। प्रारम्भ में तेरापंथ महिला मण्डल की सदस्याओं ने मंगलाचरण प्रस्तुत किया। कार्यक्रम का संयोजन पत्रकार आलोक खटेड़ ने किया।

इस अवसर पर प्रेक्षा प्राध्यापक मुनिश्री किशनलाल का स्वागत करते हुए वक्ताओं ने कहा कि मुनिश्री के आगमन से लाडनूँ में आध्यात्मिक चेतना का जागरण होगा। समारोह में मुनिश्री धनंजय कुमार जी ने मुनिश्री किशनलाल जी को सेवा दायित्व का हस्तांतरण किया। ध्यातव्य है कि शासनश्री मुनि किशनलाल एवं उनके सहवृत्ती संत मुनि हिमांशुकुमार, मुनि नीरजकुमार, मुनि मेरूकुमार एवं मुनि जिज्ञासुकुमार का दिनांक 18.04.2013 को प्रातः लाडनूँ में पदार्पण हुआ। मुनिवृन्द दिन में कमल सिंह सिंघी के मकान में विराजे। सायंकाल जैन विश्व भारती के लिए प्रस्थान करते समय संयुक्त मंत्री जीवनमल मालू, निदेशक राजेन्द्र खटेड़, मुख्य कार्यकारी अधिकारी हेमन्त नाहटा ने जैन विश्व भारती परिवार, शहर के गणमान्य नागरिक एवं तेरापंथ समाज श्रावकों के साथ मुनिश्री का भावभरा स्वागत किया। सम्पूर्ण वातावरण श्रावक–श्राविकाओं द्वारा उच्चारित गीतिकाओं एवं उद्घोषों से आल्हादित हो उठा। मार्ग में जनसमुदाय ने मुनिश्री के दर्शन कर आशीर्वाद प्राप्त किया। मुनिश्री ने मार्ग में वृद्ध साध्वी सेवा केन्द्र एवं ऋषभद्वार में रुक कर साध्विगण से मिलकर कुशलक्षेम पूछी। जैन विश्व भारती के मुख्य प्रवेश द्वार पर शासन गौरव मुनिश्री धनंजयकुमारजी ने मुनिगणों का स्वागत किया। अहिंसा भवन पहुंचकर मुनि किशनलाल ने वहां विराजित मुनिश्री सुमेरमलजी स्वामी एवं वृद्ध साधुओं के दर्शन किये। इस अवसर पर उपस्थित महानुभावों, माताओं, बहनों को संबोधित करते उन्होंने सबको जीवन में सद्वृत्तियों के साथ आगे बढ़ने का संदेश दिया। मुनि धनंजय कुमार ने सन्तों के आगमन पर हर्ष व्यक्त करते हुए शुभ भविष्य की कामना प्रकट की। मुनिश्री सुमेरमलजी 'सुदर्शन' ने मंगलपाठ सुनाते हुए सबको आशीर्वचन कहे। कार्यक्रम की व्यवस्थाओं में जीवन विज्ञान अकादमी के सहायक निदेशक हनुमान मल शर्मा की सक्रिय सहभागिता रही।